परिवार से बड़ा कोई धन नहीं

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

परिवार वह इकाई है जिसमें माता–पिता, दादा–दादी, भाई–बहिन, चाचा–चाची सब एक साथ निवास करते हैं। भारतीय परिवार परम्परा सामूहिक भावना से युक्त है। पहले परिवार में तीन–चार पीढ़ियों के लोग एक साथ रहते थे, किन्तु आजकल यह प्रभा टूट रही है। जब कोई छोटी–मोटी तकरार होती है तो आज का व्यक्ति तनाव में आ जाता है। जिसका परिणाम यह होता है कि परिवार टूटने और बिखरने लगता है। भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार प्रथा एक विशेषता है। यह प्रथा बहुत प्राचीनकाल से चली आ रही है। परिवार के सभी सदस्य एक साथ एक छत के नीचे जीवनयापन करते है। सब एक साथ रहते है। सबमें एकता बनी रहती है। सामूहिक परिवार का सबसे बड़ा लाभ यह है कि कोई भी कार्य हो सबके सहयोग से शीघ्र हो जाता है। भारत की अधिकांश आबादी गांवों में रहती है। परिवार में बड़े–छोटे का और छोटे–बड़ों का सम्मान करते है। माता–पिता की सेवा करना पुत्र का प्रथम कर्तव्य होता है। माता–पिता की सेवा ईश्वर सेवा होती है। पुत्र को माता–पिता के पास रहकर बहुत सांत्वना मिलती है। जब कहीं बाहर से पुत्र या पुत्री माता–पिता के पास आते हैं तो उन्हें अपनत्व प्राप्त होता है। सामूहिक परिवार में कुछ लोग नौकरी करते हैं, कुछ लोग व्यापार करते हैं और कुछ लोग घर पर रहकर कृषि कार्य करते हुए माता–पिता की सेवा करते हैं। सब मिलजुलकर जीवन यापन करते हैं। सामूहिक परिवार तभी चलता है जब घर का मुखिया सबके साथ समान व्यवहार करता है। किसी को यह महसूस न हो कि मुझे कोई वस्तु कम या किसी को ज्यादा मिली। किसी सामूहिक कार्यक्रम में परिवार के सभी लोग मिलकर कार्य कर लेते हैं। किसी के ऊपर कार्य का बहुत भार नहीं पड़ता था। पहले जिस परिवार में जितने अधिक लोग रहते थे वह परिवार अपने आपको बहुत अधिक शक्तिशाली मानता था। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता यह कहावत यह बताती है कि अकेला आदमी किसी कार्य को करता है तो कई दिनों में वह कार्य पूरा होता है। यदि कई लोग मिलकर उस कार्य को करें तो कार्य शीघ्र ही

पूरा हो जाता है। इसीलिए कहा गया है कि समूह में शक्ति होती है। एक लकड़ी को अकेले तोड़ा जा सकता है किन्तु लकड़ी के एक बण्डल को नहीं तोड़ा जा सकता। परिवार सबसे बड़ा धन है। किन्तु आज के युग में न्यूक्लियर फैमिली के कारण संयुक्त परिवार प्रथा टूटती जा रही है।

छोटा परिवार हमारी संस्कृति के अनुकूल नहीं है। यह पाश्चात्य सभ्यता की देन और प्रभाव है। जैसे पाश्चात्य देशों में पति–पत्नी और बच्चे ही परिवार के सदस्य होते हैं। जैसे ही बच्चा बड़ा होता है विवाह करके वह अपने परिवार को लेकर अलग हो जाता है। यही प्रथा आजकल अपने देश में भी देखी जा रही है। जैसे ही बच्चे की शादी हुई, वह अपनी पत्नी को लेकर अलग राह अपना लेता है। वह यह सोचता है कि मेरे द्वारा कमाया गया पैसा केवल पत्नी और बच्चे पर ही खर्च हो। यह सोच ठीक नहीं है जिस माता–पिता ने बच्चों को अनेक कष्ट सहकर पाल–पोषकर बड़ा किये है, उनकी भी कुछ अपेक्षाएं होती है। किन्तु जैसे ही बच्चा अपने पांव पर खड़ा हुआ वह अपने को परिवार से अलग मानने लगता है और अपने को परिवार से अलग कर लेता है। भारत देश में वसुधैव कुटुम्बकम् का सूत्र बहुत प्राचीन है। केवल पारिवारिक सदस्य ही नहीं बल्कि और अन्य लोग भी यदि आ जाये तो हमारे देश में उनका स्वागत और सत्कार हुआ है।

आज का मानव इतना असहनशील हो गया है कि वह किसी की बात को सहना ही नहीं चाहता। परिवार में माता–पिता या अन्य श्रेष्ठ लोग यदि बच्चे को उसके किसी आचरण के लिए कुछ सुझाव देते हैं या उसको डाटते हैं तो बच्चा इसको अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल मानता है। जबकि उनका उद्देश्य यह होता है कि बच्चे में संस्कार आवे और उसके बुरे विचार दूर हो। पहले परिवार के बुजुर्ग या श्रेष्ठ लोग किसी को कुछ कह देते थे तो सभी उनकी बात का आदर करते थे। उनकी बात का विरोध करने का साहस किसी में नहीं रहता था। इसलिए परिवार संयुक्त रूप से बना रहता था और प्रगति करता था। परिवार के टूटने का दूसरा मुख्य कारण है त्याग की भावना का अभाव। आजकल परिवार के सदस्यों में त्याग की भावना का अभाव दिखाई देता है। एक मां–बाप के यदि चार लड़के हैं तो चारों यदि शादी–शुदा है तो उन चारों की राह अलग–अलग रहेगी। सभी केवल अपनी पत्नी और बच्चे

के बारे में ही अधिक सोचते है। पत्नी एक दूसरे के घर से आकर परिवार के माहौल को देखकर परिवार में एड्जेस्ट होती है। हो सकता है कि बड़े परिवार में सबको अधिक सुविधाएं न मिल सके किन्तु यदि त्याग की भावना रहे तो सबका भरण–पोषण आसानी से और अच्छे ढ़ंग से हो सकता है। परिवार के टूटने का तीसरा मुख्य कारण आवश्यकता की अधिकता है। धीरे–धीरे मनुष्यों की आवश्यकताएं बढ़ती जा रही है। पहले लोग सीमित आवश्यकता में ही अपना जीवनयापन कर लेते थे। एक या दो जोड़ी कपड़े में एक दो वर्ष व्यतीत कर लेते थे, किन्तु आज एक व्यक्ति के पास उतने कपड़े रहते हैं, जितना पहले पूरे परिवार में संभव नहीं था। खान–पान, रहन–सहन, आडम्बर और दुनिया की चकाचौंध ने लोगों को ऐसा आकर्षित किया है कि उनकी आवश्यकताएं बढ़ गयी है। आजकल टूटते परिवार में अहंकार की लड़ाई मुख्य कारण है।